ब्रह्मा के पौत्र अङ्गिरस समस्त शास्त्रों के ज्ञाता, वेदो के पारंगत थे, उन्होंने भगवान महादेव की तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और वर मांगने को कहा अङ्गिरस बोले कि मैं तो आपके दर्शन से ही कृतकृत्य हो गया हूं, अब कोई कामना नहीं रहीं है। इस पर शिव ने कहा -

**'तुमने महान तप किया है, तुम इन्द्र आदि सभी देवताओं के गुरु होओगे तथा सभी ग्रहों में पूज्य होओगे और 'बृहस्पति' नाम से पुकारे जाओगे। तुम बड़े वक्ता और विद्वान होओगे, तुम्हारी या तुम्हारे द्वारा जो मेरी अर्चना करेगा, वह तुम्हारे समान ही विद्वान एवं श्रेष्ठ वक्ता बनेगा।'**

तदनन्तर बृहस्पति को देवताओं का आचार्य पद प्राप्त हुआ और वे स्वर्गलोक के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए। धनबल, राज्य बल से भी अधिक श्रेष्ठ **'ज्ञान बल'** है। इस ज्ञान को, समस्त शास्त्रों के ज्ञान को, आध्यात्मिक सूक्ष्मताओं को जानने वाले ज्ञानी की सर्वत्र पूजा होती है- **'विद्वान सर्वत्र पूज्यते'**।

देवगुरु बृहस्पति द्वारा प्रणीत शिव साधना से व्यक्ति की पूर्ण आध्यात्मिक उन्नति होती है, मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है और यदि पूर्ण श्रद्धा से साधना सम्पन्न कर ली जाये तो भगवान शिव के परोक्ष-अपरोक्ष दर्शन भी सम्भव होते हैं। बृहस्पति की यह साधना करने से गुरु कृपा भी प्राप्त होती है, क्योंकि बृहस्पति गुरु के ही रुप हैं।

इस साधना को **श्रावण मास के किसी भी दिन अथवा किसी भी प्रदोष** से प्रारम्भ किया जा सकता है। इस साधना को प्रातःकाल ही सम्पन्न करना चाहिए। उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख कर, गुरु चित्र एवं शिव चित्र का संक्षिप्त पूजन करें। गुरु मंत्र की एक माला अवश्य जप करें। फिर अपने सामने एक थाली में कुंकुंम से गुरु मंत्र अंकित करें। इसके ऊपर पुष्प का आसन देकर **'तांत्रोक्त रुद्र यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र की दायीं ओर पुनः पुष्प का आसन देकर **'गुरु गुटिका'** रखते हुए देवगुरु बृहस्पति की स्थापना करें। फिर **'चैतन्य माला'** से निम्न मंत्र की 7 माला जप 16 दिन तक नित्य करें -

**बृहस्पतीश्वर शिव मंत्र**

*।। ॐ श्रीं नमः शिवाय ॐ श्रीं।।*

आठवें दिन 'चैतन्य माला' को गले में धारण कर लें। साधना समाप्ति होने के बाद कम से कम एक सप्ताह तक अन्य सामग्री को पूजा स्थान में ही रहने दें, फिर बाद में उसे जल में विसर्जित कर सकते हैं।

**प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/-**